International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 136-138

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 136-138
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-03-2018
Accepted: 25-04-2018

कुमारी बन्दना शर्मा
हिमाचल प्रदेश विश्वविघालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

कौशल्या चौहान
हिमाचल प्रदेश विश्वविघालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
कुमारी बन्दना शर्मा
हिमाचल प्रदेश विश्वविघालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

म्लेच्छ देश एक परिचय

कुमारी बन्दना शर्मा, कौशल्या चौहान

सारांश
साधारण शब्दों में म्लेच्छ शब्द का अर्थ असभ्य भाषा का प्रयोग करने वालों के लिये किया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में म्लेच्छ शब्द का अर्थ वर्णसांकर्य जाति वाले लोगों के लिये किया गया है। जिसे चारों वर्णों से बाहर रखा गया है। म्लेच्छों के विषय में अध्ययन करने पर उनके निवास स्थान का क्षेत्र काफी विस्तृत प्राप्त हुआ है। इनका निवास स्थान उत्तर दिशा की ओर अत्याधिक बतलाया गया है, केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य प्रसिद्ध देशों चीन, मगध और दशमालिक इत्यादि में भी इनके निवास स्थान की पुष्टि हुई है। सिन्ध का वर्णन अत्याधिक प्राप्त हुआ है क्योंकि सिन्ध में रहने वाले लोग अत्याधिक नास्तिक होते थे तथा म्लेच्छों को नास्तिक लोगों की श्रेणी में रखा गया है।

कुट शब्दः म्लेच्छ देश, सिन्ध

प्रस्तावना
आर्यवर्त से भिन्न देशों को म्लेच्छदेश कहा गया है।[1] ये म्लेच्छदेश ही उत्तरकालीन इतिहास में दैत्य और दानव देश कहलाये क्योंकि इन देशों पर दिति और दनु माताओं की सन्तानों का राज्य रहा अतः इन म्लेच्छदेशों को असुर देश भी कहा गया। आर्यवर्त से भिन्न पूर्व देश से लेकर ईशान उत्तर और पश्चिम देशों में रहने वालों के नाम ही दस्यु, असुर और म्लेच्छ प्रसिद्ध हुये। असीरिया इन्हीं असुरों का देश था।[2]

स्मृतिकार देवल ने सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, म्लेच्छ देश, अंग वंग, कलिङ्ग आदि देशों में म्लेच्छों का निवास स्थान बतलाया है क्योंकि इन देशों में नास्तिक लोगों की अधिकता थी तथा यहाँ कोई भी धार्मिक तथा संस्कारी कार्य नहीं किए जाते थे।[3] वाल्मीकीय रामायण में भी म्लेच्छों की उपस्थिति को बतलाया गया है कि ये राजा दशरथ की राज्यसभा में उपस्थित होकर राज्य के शासन कार्यों में अपना मत रखते थे।[4] इसके अतिरिक्त एक अन्य सन्दर्भ में सुग्रीव ने माता सीता की खोज के लिए शतबलि को उत्तर दिशा में स्थित प्रदेश में भेजा था जो क्षेत्र उस समय म्लेच्छों के लिए प्रसिद्ध था। अतः स्पष्ट है कि ये उस समय उत्तर दिशा में निवास करते होंगे।[5] योग वसिष्ठ के अनुसार भी उस समय सम्पूर्ण उत्तरापथ म्लेच्छों से भरा हुआ था तथा सम्पूर्ण उत्तर और पश्चिम दिशायें म्लेच्छों को प्रतिष्ठित करती थी।[6]

महाभारत के भीष्म पर्व के अनुसार भी म्लेच्छों का स्थान उत्तर दिशा में स्थित किया गया है, क्योंकि उस समय ये उत्तर दिशा में ही निवास करते थे।[7] मगध, चीन और दशमालिक देश भी म्लेच्छ देश माने गये है क्योंकि इन देशों में म्लेच्छ काफी प्रसिद्ध हुए थे।[8] भारत वर्ष विभिन्नताओं का देश रहा है तथा उस समय भी भारत में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे जिनमें आर्य तथा म्लेच्छ मुख्य रूप से बतलाये गये हैं, अतः अन्य देशों के साथ–साथ भारत भी म्लेच्छों के निवास स्थान की पुष्टि

[1] म्लेच्छदेशस्त्वतः परः।। मनुस्मृति, 2.23
[2] दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0, 353
[3] सिन्धुसौवीरराष्ट्र तथा प्रत्यन्तवासिनः।
कलिङ्गकोङ्कणन्वङ्गान्गत्वा संस्कारर्महति।। देवल स्मृति, 16
[4] प्राच्योदीच्या प्रतीच्याश्च दक्षिणात्याश्च भूमिपाः।
म्लेच्छाश्चार्याश्च ये चान्ये वनशैलान्तवासिनः।। रामायण, 2.3.25
[5] तत्र म्लेच्छान्पुलिन्दाश्च शूरसेनांस्तथैव च।
प्रस्थलान्भरतांश्चैव कुरूंश्च सह मद्रकैः।। वही, 4.43.11
[6] सुराष्ट्रधिपनिर्णीत सर्वम्लेच्छोत्तरपथम्।
मालदेश समाक्रान्त सर्वपाश्चात्यतङ्गणम्।। योग वसिष्ठ, 3.17.22
[7] उतराश्चापरे म्लेच्छा जना भारतसत्तम। महाभारत, भीष्म पर्व, 10.63
[8] तथैव मरधाश्चीनास्तथैव दशमालिकाः।। वही, 10.65

करता है।[9] इसके अतिरिक्त महाभारत में मग ब्राह्मणों का वर्णन भी प्राप्त होता है जिसमें यह प्राप्त हुआ है कि ये ब्राह्मण पहले म्लेच्छ जाति के थे तथा उनके देश मग, मशक, मानस तथा मन्दग थे और वहाँ रहकर वह अपने नित्य कार्य किया करते थे।[10] मग ब्राह्मणों के बारे में यह वर्णन आया है कि ये मग ब्राह्मण कृष्ण के पुत्र साम्ब द्वारा शाकद्वीप से लाये गये थे।[11] महाभारत में भी इन्हीं मग ब्राह्मणों का वर्णन किया गया है जो मूलतः म्लेच्छ थे तथा बाद में संस्कारित होकर मग ब्राह्मण बने।

इन मग ब्राह्मणों को गौड़ ब्राह्मण भी कहा गया है, इनका वर्णन स्कन्द पुराण में प्राप्त होता है कि परशुराम जी समुद्र से भूमि माँगकर शूर्पारक क्षेत्र में रह रहे थे तथा वहाँ ब्राह्मणों को स्थापित करने की सोच रहे थे तभी अकस्मात् समुद्र के किनारे चिताभूमि के निकट कुछ पुरुष आकर खड़े हो गये। परशुराम ने पूछा–आप लोग कौन हो? वे बोले हम मल्लाह है तथा मच्छली मारकर जीवन यापन करते हैं। परशुराम ने कहा – कि तुम लोग ऐसे समय दिखाई दिये जब मैं ब्राह्मणों को यहां स्थापित करने की सोच रहा था। इतना कहकर जल छिड़क कर उन्हें ब्राह्मण बना दिया। चूँकि चितास्थान पर पवित्र ब्राह्मण बनाये गए अतः वे ब्राह्मण चित्तपावन ब्राह्मण कहलाये।[12]

भविष्य पुराण में भी कण्व ऋषि द्वारा मिश्र देश के म्लेच्छों को संस्कारित कर ब्राह्मण बनाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[13] अतः यह म्लेच्छ ही थे।

गरूड़ पुराण के अनुसार लम्बक, वाहीक, गान्धार, माद्र, तालनागा तथा जाहुत नामक देशों को म्लेच्छ कहा गया है।[14] साथ ही सिन्ध में रहने वाले नास्तिक म्लेच्छों को यवन कहा है, इसका अर्थ यह है कि म्लेच्छ और यवन एक ही जाति के दो विभिन्न नाम है। पश्चिम में स्थित यवनों के बारे में बतलाया गया है कि ये लोग नास्तिक तथा अधर्मी होते थे और ये विशेषतायें मुख्यतः म्लेच्छों तथा यवनों की ही है।[15] पद्म पुराण के अनुसार म्लेच्छों का स्थान तुर्क और अरब वर्णित है, इसमें तुरुष्क–म्लेच्छों के साथ–साथ म्लेच्छ यवनों का वर्णन भी दिखलाया गया है।[16]

विष्णुधर्म सूत्र के अनुसार जो लोग जाहुत या गजनी देश में रहते हैं उन्हें हिमालय में स्थित म्लेच्छ कहा गया है, वहाँ पर ताजिकों, तुरुषकों का अधिकार हो गया था। लम्पगन तथा उसके आस–पास का क्षेत्र शाही राजाओं के अधिकार में था। गान्धार देश जो वर्तमान का अफगानिस्थान है उसका अधिकांश भाग काबुल या जाबुल के राज्य में शामिल था अतः इन सभी स्थानों पर म्लेच्छों का निवास स्थान रहा है।[17] मत्स्य पुराण के अनुसार इनका निवास स्थान हिमालय कहा गया है। गङ्गा की सात घाटियों में रहने वालों में म्लेच्छों, बर्बर, यवन, खस आदि को स्थित कहा गया है।[18] अतः हिमालय भी म्लेच्छों का निवास स्थान माना गया है।

मत्स्य पुराण में कुछ देशों को श्राद्ध के लिए अयोग्य घोषित किया गया है। इसमें यह बतलाया गया है कि वे ब्राह्मण जो कृत्घ्न हैं, नास्तिक हैं, जो म्लेच्छ देशों में निवास करते है जो त्रिशंकु, करबीर, आन्ध्र, चीन, द्रविड़ एवं कोङ्कण देश हैं उन्हें श्राद्ध के समय अलग कर देना चाहिए क्योंकि वे म्लेच्छ देशों में रहने के कारण दूषित माने गये है।[19] वायु पुराण के अनुसार त्रिशंकु देश जिसका विस्तार बारह योजन है तथा जो महानदी के उत्तर और कीकट (मगध) के दक्षिण में है म्लेच्छों के निवास स्थान होने के कारण श्राद्ध योग्य नहीं है।[20] ब्रह्म पुराण में भी, किरात देश, कलिङ्ग देश कृमि देश, कोङ्कण देश, दशार्णदेश, कुमार्यदेश, तंगण देश, सिन्धु नदी से उत्तर, नर्मदा से दक्षिण तथा करतोया से पूर्व देश इन देशों में म्लेच्छों का निवास स्थान होने के कारण ये श्राद्ध में वर्जित बतलाए गए हैं।[21] बौधायन धर्म सूत्र के अनुसार अनेक देशों के नाम वर्णसंकरों के नाम पर रखे हुए बतलाये गए है। जैसे – मागध, वैदेह, निषाद, अम्बष्ठ मल्ल, लच्छिवि, चाण्डाल आदि।[22] भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में कहा है कि जिस देश में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था नहीं है चाहे वहाँ पर आर्य भी निवास करते हों तब भी वह देश म्लेच्छ देश कहलायेगा।[23]

भारतवर्ष में अपने से भिन्न विदेशियों को म्लेच्छ कहने की परम्परा रही है अतः यहाँ के लोगों ने यवनों, अंग्रेजों तथा मुसलमानों को म्लेच्छ कहकर सम्बोधित किया है। जब आर्यवर्त में म्लेच्छों का आगमन हुआ तो म्लेच्छ लोगों के सम्पर्क में रहने से आर्य भी म्लेच्छ बन गए थे अतः भविष्य पुराण में आर्य देश को म्लेच्छ देश की संज्ञा दी गई है तथा वहाँ रहने वाले लोगों को म्लेच्छ बतलाया है क्योंकि म्लेच्छ देश में बुद्धिमान मनुष्य भी म्लेच्छों के जैसे धर्म का आचरण करने वाले हो गए।[24] आर्यों के इस देश में दस्यु, शबर, भिल्ल तथा मूर्ख लोग रहते थे।[25] कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार चन्द्रगुप्त ने अपनी सेना में प्रतिरोधक, चोरगण, किरात म्लेच्छ तथा जंगली जाति के लोग को भर्ती के योग्य बतलाया था तथा इन जातियों का निवास स्थान पंजाब और उत्तर पश्चिम निर्देशित था।[26] विशाखदत्त के मुद्राराक्षस में भी इन जातियों को उत्तर पश्चिमी भारत का बतलाया गया है तथा इन जातियों में यवन किरात, काम्बोज, म्लेच्छ, शक पारसीक तथा वाह्लीक आदि जातियों को लड़ाकू जातियाँ बतलाया है।[27] महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में भी इन म्लेच्छ, किरातादि जातियों का स्थान हिमालय पर्वत वर्णित किया गया है। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में रघु

---

[9] आर्या म्लेच्छाश्च कौरत्य तैर्मिश्राः पुरुषा विभो।। वही, 10.12

[10] मगाश्च मशकाश्चैव मानसा मन्दगास्तथा।
मगा ब्राह्मण भूयिष्ठाः स्वकर्मनिरता नृप।
मशकेषु तु राजन्या धार्मिकः सर्वकामदाः।। वही 12.33–34

[11] एस0एल0, सिंह देव निर्माही : ऋग्वैदिक असुर और आर्य, पृ0, 172

[12] चितास्थाने तु सहसा ह्यागतांश्च ददर्शस का जातिः कश्च धर्मश्च क्व स्थाने चैव वासनम्। ———————— ——— चितास्थाने पवित्रत्वा चित्तपावन संज्ञका।। स्कन्द महापुराण, सहयाद्रि खण्ड, 17

[13] सरस्वत्या सया कण्वो मिश्रदेशमुयाययौ।
म्लेच्छा संस्कृतय चाभाष्यत्तदा दश सहस्त्रकान्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 4. 21.16–17

[14] लम्बकास्तननागाश्चमाद्रगान्धारवाह्लीकाः।
हिमाचलालयाम्लेच्छा उदीचीं दिशमाश्रिताः।। गरूड़ पुराण, 1.55.17

[15] स्त्रीराज्याः सैन्धवा म्लेच्छा नास्तिका यवनास्तथा।
पश्चिमेन च विज्ञेया माथुरानैषधैः सह।। गरूड़ पुराण, 1.55.15

[16] उत्तरस्या च गिरयो म्लेच्छाः पर्वतवासिनः।
सर्वभक्षा दुराचारा बन्धबन्धरताः किल।। पद्म पुराण, 5.55.75

[17] लम्पगास्तालनागाश्च मरूगान्धार जाहुताः।
हिमवन्निलया म्लेच्छा उदीचीं दिशमाश्रिताः।। विष्णु धर्म सूत्र, 1.9.9

[18] तान् देशान् प्लावयन्ति स्म म्लेच्छप्रायांश्च सर्वशः।
स शैलान् कुकुरान् रौध्रान बर्बरान् यवनान् खसान्।। मत्स्य पुराण, 121.43

[19] कृतघ्नान्नास्तिकांस्तद्वन्म्लेच्द्वदेश निवासिनः।
त्रिशंकुबर्वरद्रावतीतद्रविड़ कोंकणान्।
वर्जयेल्लिगिनः सर्वान् श्राद्धकाले विशेषतः।। मत्स्य पुराण, 16.16.17

[20] काणे पी0वी0: धर्मशास्त्र का इतिहास भाग–3, पृ0, 1220

[21] वही, पृ0,1220

[22] वर्णसंकराद् उत्पन्नान् व्रात्यानाहुर्मनीषिणः।। बौ0ध0सू0, 1.9.15

[23] चातुर्वर्ण्यव्यवस्थानं यस्मिन् देशे न विद्यते।
म्लेच्छदेशः स विज्ञेय आर्यावर्तस्ततः परम्।। काम्बोज जिया लाल, प्राचीन काम्बोज जन और जनपद, पृ0,120

[24] म्लेच्छदेशे बुद्धिमंतो नरा वै म्लेच्छधर्मिणः।
म्लेच्छाधीना गुणाः सर्वे अवगुणा आर्यदेशके।।
म्लेच्छराज्यं भारते च तद्वीपेषु स्मृतं तथा। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.4.39–40

[25] दस्यवः शबरा भिल्ला मूर्खा आर्य स्थिता नराः।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3. 4.38

[26] जिया लाल काम्बोजः प्राचीन कम्बोज जन और जनपद, पृ0 290

[27] अस्ति तावच्छकयवनकिरातकाम्बोज पारसीक वाह्लीकाप्रभृतिभिः चाणक्यमतिप्रगृहतैश्च चन्द्रगुप्तपर्वतेश्वर बलैरूदधिभिरिव प्रचलितसलिलैः समन्ताद् उपरूद्धं। मुद्राराक्षस, पृ0, 130

तथा हिमालय में रहने वाले म्लेच्छ जाति[28] के किरातों के साथ परस्पर युद्ध का वर्णन बतलाया है जिसमें रघु ने इनको पराजित किया था।

भविष्य पुराण में जहाँ शालिवाह्न राजा का वर्णन किया गया है वहाँ पर वाह्लीक, कामरूप, रोमज, खुरख, शठ आदि जातियों[29] पर शालिवाहन द्वारा विजय प्राप्त की गई थी। इन जातियों के अलग–अलग देश बन गये थे। वाह्लीक नाम का देश जिसका पाणिनि के अनुसार आधुनिक नाम अब पंजाब है, महाभारत की व्याख्या के अनुसार सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के बीच का प्रदेश किया गया है[30], यह देश म्लेच्छों का मुख्य निवास स्थान था। शालिवाहन ने इन सभी देशों पर अपना अधिकार स्थापित किया तथा उसने म्लेच्छों और आर्यों की पृथक्–पृथक् मर्यादा स्थापित की।[31] आर्यों का स्थान सिन्धु में किया तथा सिन्धु से परे म्लेच्छों का स्थान निश्चित कर दिया।[32] भविष्य पुराण में याज्ञिक देश और म्लेच्छ देश का अन्तर बतलाया गया है। कहा गया है कि जिस देश में श्यामा गौ और मृग स्वतन्त्र स्वभाव से विचरण किया करते हैं उसे याज्ञिक देश कहा गया है इससे भिन्न देश म्लेच्छ देश है। श्रेष्ठ ब्राह्मणों के लिए कहा गया है कि वे शुभ देशों में अपना निवास स्थान बनायें।[33]

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. मूल–ग्रन्थ एवं आलोचनात्मक–ग्रन्थ
2. ऋग्वैदिक असुर और आर्य, लेखक : डॉ0एस0एल0देव निर्मोही, प्रकाशक : राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
3. गरुड़ पुराण – एक अध्ययन, लेखक : अवध बिहारी लाल अवस्थी प्रकाशक : कैलाश प्रकाशन लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1968
4. देवल स्मृति तथा पराशर स्मृति का तुलनात्मक अध्ययन, लेखिका : डॉ0 धनपति देवी काश्यप, प्रकाशक : नाग प्रकाशक 11ए०/यू०ए० जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1997
5. धर्मशास्त्र का इतिहास, लेखक : डॉ0 पाण्डुरङ्ग वामन काणे, व्याख्याकार : अर्जुन चौबे, प्रकाशक : हिन्दी समिति, सूचना विभाग उत्तरप्रदेश, लखनऊ प्रथम संस्करण, 1995
6. प्राचीन काम्बोज जन और जनपद, लेखक : जिया लाल काम्बोज, प्रकाशक : ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 5825 न्यू चन्द्रावल रोड, जवाहर नगर, दिल्ली
7. बौधायन धर्मसूत्र, व्याख्याकार : डॉ0 उमेश चन्द्र पाण्डेय, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी
8. भविष्य पुराण (दो खण्ड), सम्पादक : श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली उत्तर प्रदेश, 1971
9. मत्स्य पुराण, प्रकाशक : गीता प्रेस, गोरखपुर, सं0 2067
10. महाभारत (अट्ठारह पर्व) प्रणेता : वेदव्यास, अनुवादक : पण्डित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2067
11. मनुस्मृति, लेखक : मनु, टीकाकार : पण्डित रामेश्वर भट्ट, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली संस्करण, 1985
12. मुद्राराक्षस, लेखक : विशाखदत्त, सम्पादक : शाशिकला, टीकाकार : सत्यव्रत सिंह, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस वाराणसी, चतुर्थ संस्करण, 1973
13. योग वसिष्ठ, प्रकाशक : मोती लाल बनारसी, मुख्य कार्यालय बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली–7
14. रघुवंश, लेखक : कालिदास, टीकाकार : हरगोविन्द शास्त्री, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, विद्या विलास प्रेस वाराणसी, पंचम संस्करण
15. रामायण, लेखक : वाल्मीकि, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर कलकता, संवत् 2062
16. विष्णु पुराण, सम्पादक : थानेशचन्द्र उप्रेति, प्रकाशक : परिमल पब्लिकेशन्स, 27/28 शक्ति नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986
17. स्कन्द पुराण, सम्पादक : श्री राम शर्मा आचार्य प्रकाशक : संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब वेदनगर, बरेली, उत्तरप्रदेश : संस्करण 1972
18. सत्यार्थ प्रकाश, लेखक : स्वामी दयानन्द सरस्वती, सम्पादक : युधिष्ठिर मीमांसक, प्रकाशक : राम लाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ सोनीपत, हरयाणा, द्वितीय संस्करण, 1975

---

[28] तत्र जन्यं रघोघोरं पर्वतीयैर्गणरभूत्।
नाराचक्षेपणीयाशमनिष्पेषोत्पतितानलम्।। रघुवंश चतुर्थ सर्ग, 79
अथ रघोः पवतीयर्म्लेच्छजातीयैः किरातादिभिः सह घोर युद्धमभूदित्याह रघुवंश की मल्लिनाथ की टीका, 79

[29] वाहलीकान्कामरूपांश्च रोमजान्खुरजाञ्छठान्। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3. 20.17

[30] पञ्चानां सिन्धुष्ठानां नदीनां येऽन्तराश्रिताः।
वाहीका नाम ते देशाः ——————————।। महाभारत कर्ण पर्व, 44.7

[31] स्थापिता तेन मर्य्यादा म्लेच्छार्यणां पृथक्पृथक्।
सिंणुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्य्यस्य चोत्तमम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.20.20

[32] म्लेच्छस्थानं परं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना।। वही, 3.20.21

[33] अटते यत्र कृष्णा गौ मृगो नित्यं स्वभावतः।
स ज्ञेयो याज्ञिको देशो म्लेच्छदेशस्त्वतः परः।।
एतान्नित्यं शुभान्देशान्संश्रयेत द्विजोत्तमः।। वही, 1.21.31–32